मैराथन

इन तमाम वर्षों के बाद भी द्वारिका सिर्फ एक वजह से मुझे याद है‌ःरामधनी मैराथन के आखिरी दौर मे गोकि उसे काफी पीछे छोड़ गया था. पर द्वारिका अपनी अन्तिम सॉस संजोए दौड़े जा रहा था।जीवन के मैराथन को वो हार और जीत के फीते से नही मापता था।
यूॅ तो सूर्योदय पूरब मे और सूर्यास्त पश्चिम मे होता है. परन्तु अट्ठारह वर्षो तक मैने अविराम सूर्योदय और सूर्यास्त पूरब और पश्चिम मे नही. बल्कि द्वारिका और रामधनी के परिवारों मे देखा।धूप और छॉव के बीच ये ऑख मिचौनी वर्षो तक चली. आखिरकार सूर्य देवता को एक निर्णय लेना ही पड़ गया।सम्भवतया ये उनका आखिरी निर्णय था. जिसे द्वारिका स्वीकारना नही चाहता था।कम से कम मेरे लिए पूरब और पश्चिम दिशा स्पष्ट थी .पर द्वारिका अपने ऑगन का अॅधेरा एक छोटी सी कटोरी से उलच उलच कर बाहर फेके जा रहा था और धूप का वो हर टुकड़ा अपनी कठौत मे बटोरे जा रहा था. जो वो बटोर सकता था।उसका पूरा नाम द्वारिका प्रसाद चौरसिया था।
मेरे बाबूजी को धनबाद के इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के धईया गेट से लगी एक सरकारी कोठी मिली हुई थी. जिसकी दो दीवारें धईया नामकी एक बस्ती से लगती थीं।कोठी के पीछे की दीवार से दूर दूर तक बस पुटुस के झाड़ या फिर यदा कदा समतल जमीने. एक बड़ा सा पोखरा और लगभग चार पॉच मील दूर सौ दो सौ झुग्गे झोपड़ियों की एक बस्ती दिखती थी।इस बस्ती का नाम कोरंगापट्टी था।बाद के दिनो मे मुझे इस बस्ती की दूसरी खासियते भी मालूम हुई।कोठी की दॉयी दीवार से लगी एक टूटी फूटी सड़क आगे जाकर एक चौमुहानी से मिलती थी. जहॉ झरिया के राजा की एक तालाब थी।इस तालाब मे इलाके के सभी धोबी गन्दे कपड़े कचारते थे।इस चौमुहानी का भी एक नाम था. रानीबॉध।हमारे दीवार से लगी चार झुग्गिया थीं. दूसरे शब्दों मे चार दुकाने थी।पहली दुकान एक मुबारक नामके दर्जी की थी. फिर रामधनी की।रामधनी और द्वारिका के दुकानो के बीच गिरी जी की दुकान थी. जो इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के कारखाने मे इलेक्ट्रीशियन थे।उन्हे सरकारी क्वार्टर भी मिला हुआ था. जिसमे उनका बड़ा और विस्तृत परिवार रहता था।वो छ बेटियों और एक बेटे के पिता थे।अपनी सीमित आमदनी से अपना परिवार चलाना उनके लिए दुरूह होता जा रहा था. अतः उन्हे भी बिजनिस मे आना पड़ा।उन्हे बोनस मिलना न था कि उनके दुकान के ताखे. दरवाजे. खिड़किया कारखाने से पार किये गए हरे रंग से रंगे जाने लगते थे. बोआमो की सफाई शुरू हो जाती थी. चूल्हे की लिपाई पुताई शुरू हो जाती थी।बोआम बिस्कुट. सेव दालमोट. लेमनचूस. लाली पाप्स. पावरोटी .पेंड़े. लड्डू और न जाने किन किन चीजों से भर जाते थे।चूल्हे पर एक धुली चमकती केतली चढ जाती थी।गल्ले पर गिरी जी की सबसे बड़ी लड़की एक सफेद ब्लाउज और एक काले छींट के घाघरे मे बैठ जाती थी।कारखाने के बन्द होते ही गिरी जी धईया की तरफ रूख कर लेते।ठीक चूल्हे के सामने वाली हरे रंग की बैंच पर वो पालथी मारे नही. कि उनकी गोरी चिट्टी बिटिया दनादन खॉटी दूध की स्पेशल चाय एक बड़े शीशे के ग्लास मे भरकर उनके सामने रख जाती और साथ मे एक प्लेट मे सेव दालमोट भी।दरअसल इस दुकान के अटूट ग्राहक और भक्षक एक तो स्वयम गिरी जी थे या फिर उनका विस्तृत परिवार था।एक महीने के अन्दर ही दुकान के सारे बोआम खाली हो जाते थे।दुकान के नाम पर बचती थी बस चाय।खुद गिरी जी औंटे दूध की स्पेशल चाय बनवा के पीते थे और ग्राहकों के चाय मे चम्मच से अमृत की तरह दूध पड़ता था।फिर धईया के ग्वाले उन्हे दूध देना बन्द कर देते थे. दुकान की शटर गिर जाती थी।दुकान के पीछे एक पक्का खपरैल कमरा था. जो तभी किराये पर चढ पाता था. जब गिरी जी की दुकान खुलती थी और दुकान के गल्ले पर उनकी बिटिया बैठती थी।दुकान पर ग्राहक तो आते न थे. बेटी गल्ला छोड़कर दुकान के पिछवाड़े किरायेदार से चुम्मा चाटी करवा आती थी।किरायेदार का जन्म और उसकी जवानी सफल हो जाती थी।दुकान की शटर गिरते ही किरायेदार का जीवन सूना और एकाकी हो जाता था. वो कहीं और की ठौर ले लेता था।इन सब बातों के बावजूद गिरी जी धईया आना बन्द नही करते थे।काम के बाद वो हर दिन धईया आते थे और अपने खाली दुकान की शटर खोलकर नियमित रूप से एक अगरबत्ती जलाकर स्वयम गॉजे की चिलम सम्हाल लेते थे।दस बजे के आस पास वो अपने घर वापस लौट जाते थे।गिरी जी की दुकान के सामने एक दो कमरे की जर्जर दुकान थी. जो कभीं किसी बनिये की होती थी।वो गल्ले और मिर्च मसाले बेचा करता था।वर्षो से ये दुकान खाली थी।इस दुकान के दरवाजे तक गायब थे।छत भी बिल्कुल ना के बराबर थी।इसके एक हिस्से मे महबूब नाम का एक दर्जी तथा दूसरे हिस्से मे एक बंगाली की चलती फिरती दुकान थी।वो बस प्याज की पकौड़ी और बेसन की नमकीन जलेबियॉ बनाता था और वो भी सीमित।सबकुछ बेच बाचकर वो दोपहर मे ही अपनी दुकान बढा कर घर चला जाता था।वो धईया का ही रहने वाला था।
एक तरह से द्वारिका और रामधनी ही एक दूसरे के एकमात्र प्रतिद्वन्दि थे।ये दोनो उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे।पता नही कब और कैसे ये दोनो धई या मे आए और सरकारी जमीन हॅथिया कर अपनी झुग्गियॉ डालकर अपनी दुकान खोल बैठे।
सुबह से गई रात तक इन दो दुकानो पर ग्राहकों की चहल पहल बनी रहती थी।उत्तर प्रदेश के ये दो जीवट योद्धा धईया को गुलजार किये हुए थे।सुबह से लेकर गई दोपहर तक उनके दुकानो के सामने से समीपवर्ती इलाकों की आदिवासी औरतें अपनी नंगी छातियॉ कूदाती उछलाती गुजरती थीं।वो हटिया मे अपनी सब्जिया बेचने आती थीं।फिर इन्ही रास्तों से कौरंगापट्टी की औरतें स्टाफ क्वार्टरों मे अपनी जवान और अनछूई बेटियों के साथ बर्त्तन मॉजने भी जाती थीं।रामधनी के पकौड़े और द्वारिका के आलूचाप्स हॉथों मे थामे कुॅआरे से लेकर साठ वर्ष के बूढे तक सौन्दर्य और शरीर का अवलोकन करते रहते थे।घर परिवार मे ये दुकाने बहाना मात्र थीं।
एक अजीब सी बात तो ये है कि अपने देश के हर शहर मे वही इलाका तेजी से पनपा. जहॉ दालमंडी जैसे रास्ते बसे।उसी मंदिर के देवी और देवता जागृत हुए. जहॉ सज धज के नारियों ने जाना शुरू किया।पता नही रामधनी और द्वारिका के दुकानो के आगे से होकर कितनी हेमा. श्रीदेवी और माधुरी दीक्षित हर रोज गुजरती थीं!धईया के इस इलाके को पनपना ही था।
द्वारिका की गुमटी के पीछे एक खपरैल झोपड़ी थी. जिसके पीछे वर्षो से फेंकी जा रही उसके चूल्हे की राखों का ढेर था।गुमटी के बगल से ही होकर एक गन्दा सा नाला बहता था।पास ही पीपल का एक बहुत ही पुराना पेंड़ था।गुमटी के सामने बॉस के दो डंडों पर एक फटा सा तिरपाल टंगा रहता था. जिसके नीचे आमने सामने बैठने की दो बैंचे थीं।गुमटी की दॉयी ताखों पर के बोआम खरीदे बिस्कुट. लेमनचूस. पावरोटी. लड्डू. पेंड़ो से भरे रहते

थे। पीछे वाला ताखा सिगरेटों और बिड़ियों से भरा रहता था। बॉयी तरफ दो चूल्हे थे। एक पर केतली का पानी उबलता रहता था. दूसरे पर द्वारिका का बड़ा भाई झरी ताजे दालमोट और आलूचाप्स छानता रहता था। पता नही इस दुकान की बुनियाद द्वारिका ने डाली थी या झरी ने या फिर दोनो ने समवेत. पर दुकान पर द्वारिका ही बैठता था। सामने पीतल के एक कठौत मे पान के पत्ते तैरते रहते थे। बगल मे एक छोटी सी लकड़ी की एक चौकी थी. जिस पर अल्यूमीनियम का एक पतरा चढा था। इस चौकी पर पान के कटे पत्ते एक साफ सूथरी अंगोछी से ढंके रहते थे. जिस पर रह रह कर द्वारिका पानी के छींटे मारता रहता था। पास ही कतार मे सजी छोटी छोटी वोआमों मे कत्थे. चूने. सूपाड़ी. मिठी सूपााड़ी. तम्बाकू इत्यादि होते थे। करीब करीब यही सामान रामधनी की गुमटी मे भी थे। प्रतिस्पर्धा बस रामधनी के पकौड़ों और झरी के आलूचाप्स के बीच था. इसके बावजूद न तो रामधनी ने कभी आलूचाप्स बनाने की सोची और न झरी ने पकौड़े तले। द्वारिका और झरी का पूरा परिवार गॉव मे ही रहता था जबकि रामधनी सपरिवार धईया मे। उसे छ बच्चे थे। सबसे बड़ी बेटी थी फुलपतिया फिर बिजयमल. भगवत. बाबूलाल. नन्दलाल और सबसे छोटा किशोरलाल। रामधनी का एक सौतेला छोटा भाई जगलाल भी साथ ही रहता था. पर उसे दुकान से कोई खास मतलब न था। उसका अपना एक निजी रिक्सा था। खाली समय मे वो अपना रिक्सा चमकाता रहता था। जगलाल की देखा देखी रामधनी के सारे बच्चे उसे भईया और अपनी मॉ को भौजी कह कर बुलाते थे। पहले ये सभी गुमटी के पीछे और बगल वाली झुग्गियों मे रहते थे. जिनकी दीवारें मिट्टी की और छतें सूखे पूआलों की थीं। बाद मे गुमटी के ठीक सामने एक दो कमरों की पक्की दुकान खाली हो गई। अब रामधनी का परिवार वहीं रहने लगा।

रामधनी छोटे कद और भरे बदन का था। कपड़े के नाम पर उसके पास चारखाने की लुंगी और एक हल्के नीले रंग की पूरे बॉह की पायलट कमीज थी। दिन भर वो नंगे पॅाव ही घूमता था। सफाई से उसे तनिक भी लगाव न था। उसकी दुकान भी बड़ी गन्दी और बेतरतीब थी। सारे सामान इधर उधर बिखरे रहते थे। उसके चाय की केतली लगभग काली हो चली थी। चाय के ग्लास तक वो ठीक से न धोता था। यहॉ तक कि अगर उसे छनमी न दिखी. तो वो अपनी गन्दी लुंगी से ही चाय छान लेता था। बिखरे बाल. बड़ी बड़ी मूछे. खुरदुरी दाढी. मैलों से भरे उसके हॉथ बिवाईयों से फटे उसके पैर . फिर भी उसके ग्राहक अटूट थे। उसका एक तकियाकलाम था. जिसके बगैर वो कुछ बोलता ही न थाःदुआखला

द्वारिका के पास भी एक तकियाकलाम थाःअलबत्ता।

वो हर रोज सुबह कारखाने के एक नलके पर नहाने जाता था. चाहे ठंढ हो या वर्षात। नहा धोकर एक भींगी अंगोछी पहने. कन्धे पर अपने कचारे कपड़े डाले अपनी लकड़ी की चप्पल चटचटाते वर्षो मैने उसे अपने घर के सामने से गुजरते देखा। वो लम्बे कद और छरहरे बदन का था। सफेद लुंगी और सफेद कुर्त्ते या सफेद पूरे बॉह की बनियान पहने वो अपने खाली समय मे चाय की ग्लासें चमकाता रहता था। चाय देने से पहले वो ग्लास को गर्म उबलते पानी से भी धोता था।

ये दोनो दुकाने ठीकठाक चल रही थीं। दोनो के अटूट ग्राहक थे। रामधनी की दुकान पर मजदूर. रिक्सेवाले. यू पी और बिहार के स्टूडेन्ट्स. काबलीवाले और ठिकेदार आते थे। द्वारिका के अटूट ग्राहक क्लर्कस थे। वो शुद्ध हिन्दी तो बोलता ही था. साथ मे बंगाली और खोट्टा भी बोल लेता था। रामधनी को अपनी जबान छोड़ कोई दूसरी भाषा आई ही नही। द्वारिका का उधार खाता साफ सूथरा रहता था. जबकि रामधनी किसी का हिसाब यहॉ तो किसी का वहॉ लिखवाकर महीने के अन्त मे सारी दुकान अपने सर पर कर लेता था।

उसकी बड़ी बेटी फुलपतिया बॉये हाथ से अपंग थी।

रामधनी के बेटे हटिया म्यूनिसपैलिटी स्कूल मे पढने जाते थे। झरी का इकलौता बेटा जयनरायन और रामधनी का बड़ा बेटा बिजयमल एक ही उम्र के थे। जयनरायन जब आठ वर्ष का था. तब झरी उसे पढाने लिखाने के लिए गॉव से उठाकर धईया ले आया था।

होली के दिन सुबह ही सुबह रामधनी और द्वारिका दोनो हमारे घर पर आते थे। द्वारिका बाबूजी के गाल पर गुलाल मलकर उनसे गले मिलता था . और हमारे बरामदे मे बैठकर मॅा के हाथों बनाई गुझिया और मठरी खाता था। रामधनी एक चुटकी गुलाल बाबूजी के पैरो पर रख कर लाख मना करने के बावजूद वही अपना सर रख देता था। मॅा का भी वो पैर ही छूता था। जब मॉ उसे एक थरिया मे खाने का सामान देती थी. तो वो उसे अपनी लुंगी मे ये कह कर बॉध लेता थाःलइकन बदे. इ परसाद ह न।ःबच्चों के लिए तो ये प्रसाद है न!ः

तमाम स्पर्धाओ के बावजूद द्वारिका और रामधनी अगर एक दूसरे के दोस्त न थे तो दुश्मन भी न थे। इनके बीच झगड़ा फसाद कभीं नही हुआ।

अचानक झरी को टी बी हो गई। बड़ी मुश्किल से उसकी जान बची। द्वारिका ने पानी की तरह पैसा बहाया। झरी की जान तो बच गई. पर द्वारिका की दुकान उजड़ गई। बेचने के नाम पर दुकान पर बस पान और पानी की चाय बची। उसके नब्बे प्रतिशत ग्राहक टूट गए।

रामधनी अब भैंस का औंटा दूध इलायची डालकर बेचना शुरू किया और साथ साथ दोपहर और शाम का खाना भी। ग्राहक बढे. पकौड़ों की खपत बढी। रामधनी की पत्नी और फुलपतिया दिन भर पहॅसूल पर प्याज काटते रहते थे। भगवत पढाई लिखाई छोड़कर दुकान पर बैठ गया था। उसके दूसरे लड़के भी दुकान के कामों मे हाथ बॅटाने लगे। द्वारिका की गुमटी मे अॅधेरा घहराता चला गया। उसके गैस वाली लालटेन शाम के सात बजे ही उॅघने लगती थी. जबकि रामधनी की दुकान पर रात के बारह बजे तक मेला लगा रहता था।

रामधनी के पास जब लक्ष्मी आई तो उसके दो पुराने शौक एक साथ करवट बदले। वो जुआ खेलना शुरू कर दिया और साथ साथ कौरंगापट्टी के कामीनो पर दबा कर पैसा बहाना शुरू कर दिया। उसे न अपने इज्जत की परवाह रही और न अपने बाल बच्चों की। ताड़ी तो वो पहले से ही पीता था . अब वो ठर्रे भी खुले आम पीना शुरू कर दिया। अपनी पत्नी को वो आम नही अमावट कहकर लतियाता जुतियाता रहता था। जब तक उसके बेटे मिलकर उस पर न जूझ पड़ते थे. वो अपनी पत्नी को पीटता रहता था। इस बीच द्वारिका अपनी पानी की चाय क्लर्कों को पिला पिला कर नेकी के दो काम कर डाला। एक पंजर के झरी को इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स मे चौकीदारी की परमानेन्ट नौकरी मिल गई। तीसरी बार मे थर्ड डिवीजन मे मैट्रिक पास जयनरायन लाइब्रेरी मे लग गया। दोनो को सरकारी क्वाटर्स भी एलाट हो गए। इनकी समवेत मदद से द्वारिका की दुकान फिर से सम्हली। रामधनी की दुकान उजड़ चली थी। जब परिवार पर भूखों मरने की नौबत आई. तब उसकी पत्नी फुलपतिया और अपने दो छोटे बेटों के साथ गॉव वापस लौट गई। मैट्रिक बिजयमल के वश की न थी। वो मेमको नाम के एक फैक्ट्री मे अपरेन्टिस हो गया। पैसे वैसे तो उसे ज्यादे न मिलते थे. फिर भी वो शादी करके अपनी पत्नी को धईया ले आया। इस भूखे परिवार मे एक और नया प्राणी आ गया भूख से मरने के लिए।

जगलाल से ये सब न देखा गया। उसने अपना बोरिया बिस्तर सम्हाला और अपने बड़े भाई को दोगला, चोर, रंडीबाज, जुआड़ी और पता नही क्या क्या गरिया कर अपने रिक्से की सीट पर जा बैठा। रामधनी रिक्से का एक पहिया जकड़े बैठा था। जगलाल तमतमाया अपनी सीट पर से उतरा और रामधनी की पीठ पर अपने दोनो हॅाथ जकड़ कर दो घूस्से बरसाया। रामधनी वहीं ढेर हो गया। जगलाल अपना रिक्सा लहराते आगे बढ चला। रामधनी कहॅारता खॅासता उठा। उसकी मूॅछ ऑसुओं, और धूल से सनी पड़ी थी। वो अपनी लुंगी से अपने नाक सुड़क सुड़क कर पोंछे जा रहा था और रोते कलपते बस यही दुहराये जा रहा थाःहमके कुटिल जान के भरत जी भी चल गईलॅ।ःमुझे कुटिल जान कर भरत जी भी चले गये।ः

रामधनी की बुद्धि ही भ्रष्ट हो चली थी। बिजयमल मेमको मे दूसरी शिफ्ट मे काम करता था। घर वापस आते अक्सर ग्यारह बारह बज जाते थे। आए दिन उसे अपनी पत्नी से उसके पिता द्वारा छेड़े जाने की खबर मिलती थी। मादरचोद, भोंसड़ी वाले से आए दिन रात का सन्नाटा भंग होता था। कभीं कभीं तो लाठियॅा तक चलती थीं। अन्त मे हारकर बिजयमल फ्लावरमील के पास एक कमरे का मकान किराये पर लेकर अपने पत्नी के संग रहने लगा।

भगवत समय से उठकर दुकान खोल देता था। रामधनी अपनी बाल्टी सम्हाले धईया के ग्वालों से भईया बाबू कहके आध सेर या एक सेर दूध पैदा कर लाता था। भगवत अपने ही चूल्हे से फेंकी गई राख के ढेर मे कोयला बिनने बैठ जाता था। पुरानी इस्तेमाल की गई चायपत्ती की चाय बनती थी। दो चार ग्राहक बच्चों का मुॅह देखकर यही चाय पी जाते थे। रामधनी के परिवार मे दाने दाने के लाले पड़ गए थे।

द्वारिका की दुकान फिर से चल निकली। झरी अपनी पत्नी गॉव से ले आया, जयनरायन ने भी शादी कर ली। फिर पता नही क्यों इन दोनो ने द्वारिका से अपने सम्बन्ध तोड़ लिए और धईया आना जाना बन्द कर दिये। द्वारिका अगर चाहता तो उसे कब की परमानेन्ट नौकरी मिल सकती थी पर ये दुकान उसकी जिद थी। वो भी अपनी पत्नी और तीन बेटों को धईया ले आया और समीप के ही एक खाली मकान मे सपरिवार रहने लगा। उसका बड़ा बेटा विकलांग था। उसकी उम्र यही कोई दस वर्ष की रही होगी। वो बस बकईयॅा ही चल पाता था।

अब फिर धूप और छॅाव के बीच ऑख मिचौनी शुरू हुई।

धईया मे एक नया कारखाना खुला, जिसमे दो सौ से ऊपर मजदूर काम करते थे। आस पास कोई दुकान न थी। रामधनी ने अपनी केतली और कराही सम्हाली। भरी दोपहरी मे वो बिना किसी छत के लकड़ी की आग पर पकौड़े तलता और चाय बनाता था। फैक्ट्री के मजदूरों को उसके पास आना ही था। भगवत और बाबूलाल दुकान सम्हालते थे और रामधनी दिन भर फेक्ट्री के सामने अपने पकौड़े और चाय बेचता था। उसकी दुकान सामानो से भरने लगी। दुकान के टूटे ग्राहक वापस लौटे। इसके पहले कि फैक्ट्री की अपनी कैन्टिन खुलती, रामधनी अपनी दु______ कान सम्हाल चुका था और इधर उधर से लिए कर्ज वापस कर चुका था। उसके दो शौकों ने उसे तीन वर्ष झंझावातों मे रखा, जिसे वो किसी तरह झेल तो गया, पर जगलाल और बिजयमल ने उसे माफ नही किया।

गुमटी के धन्धो मे बस एक परिवार को पालने तक की गुंजायश होती है। सारे सामान खरीद कर फिर थोड़े से मुनाफे पर बेचे जाते हैं। बचता बचता कुछ नही है, हॅा एक झूठा सम्मान समाज मे मिल जाता है। बीमारी की ताप इस तरह के धन्धे नही सह पाते। द्वारिका अपने विकलांग बेटे के इलाज पर पैसे खर्च कर ही रहा था कि अचानक उसके दूसरे बेटे को पिलिया हो गया। धीरे धीरे सूर्य देवता रामधनी की ओर सरक रहे थे। द्वारिका के दूसरे बेटे का इलाज दुकान को उजाड़ता चला गया। बच्चों की फिक्र मे द्वारिका भी नरकंकाल हो चला था।

बाद के वर्षो मे इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स का विस्तार धईया की तरफ हुआ। वहॅा की काफी जमीने केन्द्रीय सरकार ने खरीद ली। लोगों को उनके झुग्गी झोपड़ियों के मुवायजे मिले और साथ साथ धईया छोड़ने की नोटिशें भी।

इसके पहले कि धईया मे बुलडोजर चलते, मै आठ वर्षो के लिए मास्को चला गया। दस वर्षो के बाद मेरा धनबाद जाने का संयोग बना। मै अपने एक दोस्त के साथ धईया गया। हमारी कोठी मे एक प्राइवेट कैन्टिन चल रही थी। मेरे कमरे मे इस कैन्टिन के राशन भरे पड़े थे। हमारे गाय और मुर्गियो के घर ढहा दिये गए थे। सामने बड़ी खोह वाला महुए का पेंड काट दिया गया था। हमारे घर के सामने वाली ढलाऊ सड़क भी गायब थी। न तो धईया गेट रहा, न इन्कम टैक्स ऑफीसर का वो बन्गला। मेमको का वो भूतहा महल भी ढहवा दिया गया था। हमारे घर के सामने वाली सड़क काफी चौड़ी कर दी गई थी। उसके बगल मे अब पुटुसों का जंगल न था। अब वहॅा एक समतल मैदान था। चारो तरफ ईटो के घेरे मे गुलमोहर के पेड़ लगे हुए थे।

हमारे घर के ठीक सामने एक छोटा सा मैदान होता था, जहॅा हम रामधनी के लड़कों के साथ क्रिकेट, फूटबाल या सतगोटिया खेलते थे। इसी मैदान से लगी ओल्ड हॅास्टल की एक दीवार थी, जिसके पीछे कई प्रान्तीय मेसें थी। एक कोने मे मेसों के नौकरो के लिए नहाने के घर थे और साथ मे लगे उनके गन्दे पाखाने भी। बगल मे एक बड़ा सा गढा था, जिसमे अक्सर हमारी गेन्दें चली जाती थी। ये गढा बिसतूईयों और गिरगिटों से भरा पड़ा था। सब कुछ गिराकर यहॅा की जमीन समतल कर दी गई थी। यू पी और बिहार के स्टूडेन्टो के एप्रोच पर ये जमीन रामधनी को निन्यान्बे वर्षो के लिए लीज पर दे दी गई थी। रामधनी वहॅा एक पक्की दुकान बनवा कर दो हलवाई रख लिया था। बगल मे ही मेमको के आम का बागीचा था, जहॅा वो बीसों मेजें और बैन्चे रखवा दिया था। दुकान की बगल मे एक तने बड़े तिरपाल के नीचे उसके हलवाई तरह तरह की मिठाईयॅा समोसे पकौड़े, आलू चाप्स, और पता नही क्या क्या छाना करते थे।

रामधनी अब सेठ बन गया था। उसकी मूॅछे सफेद हो चली थीं। उसके सिर के बाल भी पक चले थे। सफेद धोती, सफेद कुर्ते, गोल्ड प्लेटेड घड़ी और काले रंग के पम्पशू मे वो वाकई किसी सेठ से कम न लग रहा था। मै जब उसकी दुकान पर गया तो वो अपने एक हलवाई को पता नही किस वजह से डॅाटे जा रहा था। दुकान पर बाबूलाल बैठा था। वो मुझे देखते ही पहचान गया, और गल्ला छोड़कर चिल्लाता भागता मेरे पास आया। रामधनी की खुशी का ये हाल था, कि दुआखला के अलावे उससे कुछ कहा ही नही जा रहा था। मै बाबूलाल के साथ रामधनी के घर भी गया। फ्लावर मील के ठीक सामने उसने एक पक्का घर अहाते के साथ बनवा लिया था, जहॅा उसका पूरा परिवार सानन्द रह रहा था। बिजयमल को मेमको मे परमानेन्ट नौकरी मिल गई थी। वो दो बेटों का बाप था। फुलपतिया भी अपने पति और तीन बच्चों के साथ इसी मकान मे रहती थी। उसका पति पी जी पी टी ऑफ़िस मे क्लर्क था। भगवत की भी शादी हो गई थी। उसे कारखाने मे चौकीदारी की परमानेन्ट नौकरी मिल गई थी। बाबूलाल आर एस पी कालेज झरिया से बी ए करके दुकान सम्हाल रहा था। नन्दलाल पी के राय मेमोरियल कालेज से बी कॅाम कर रहा था। किशोरलाल एच ई स्कूल मे पढने जाता

था।जब मैने रामधनी से कहाःतुम्हारे परिवार मे एक साथ लक्ष्मी और सरस्वती दोनो का समवेत आगमन हुआ है.तब उसकी ऑखे भर आई।बड़े भारी मन से वो बस इतना ही कह पायाःबावू! आपके जबान पर सरसती मईया क बास बस इ कुल बावूलाल क महतारी अउर जगलाल भाई ना देख पऊलॅ।जगलाल त एक टरक के नीचे आ गईलॅ अउर बावूलाल के महतारी के काली माई उठा ले गईलीं।ःबावू!आपकी जबान पर सरस्वती मॉ का निवास है।बस ये सब बावू लाल की मॉ और जगलाल भाई न देख पाये।जगलाल भाई एक ट्रक के नीचे आ गये और बावू लाल की मॉ को काली माई उठा ले गई।ः
अचानक मेरी नजर एक खाली जर्जर गुमटी पर पड़ी।यहीं कभी मेरा मुर्गीखाना होता था।गुमटी पर एक नरकंकाल बैठा रामधनी की दुकान की तरफ एकटक देखे जा रहा था।सामने पड़ी एक टूटी सी बैन्च पर एक ग्राहक भरी दुपहरी मे चाय पी रहा था।मुझे न तो द्वारिका को न उसके ग्राहक बिन्देसरी सिंह को पहचानने मे देर लगी।रामधनी ही बताने लगाःदुआरिका भाई हैं।सब कुछ गॅवा मारे।भाई भौजी.पत्नी.दो बेटे।अब बस एक विकलांग बेटा उन कर अन्तिम सहारा है।इसके अलावे दो चीजे वो अब तक नही खोये हैं।आपन जिद़ अऊर आपन दो तीन गाहक।समोसे रामधनी की दुकान से अऊर चाय दुआरिका भाई के यहॅा से।इतना खुद्दार आदमी है कि मदद को भी भीख समझता है।भगवान साक्षी है बावू!जीवन भर हम उनके अऊर उनके बेटे के रखने को तय्यार बैठे हैं पर अगर उ माने तब न!इ परदेश में जगलाल भाई के वाद भाई के नाम पर दुआरिका भाई ही तो बचे हैं।
मेरे लिए अब पूरब और पश्चिम दिशा बिल्कूल स्पष्ट थी।सूर्य देवता अपना अन्तिम निर्णय शायद ले चुके थे।उनका ये निर्णय वाजीब नही था.ये मै द्वारिका के साथ हजारों बार दुहरा सकता हूॅ।मैराथन के दौड़ को मै भी अपने ढंग से देखता हूॅ जिसका अन्तिम दौड़ाक ये जानते हुए भी कि वो ये दौड़ तो कब का हार चुका है.फिर भी अपनी अन्तिम सॅास जुटाए दौड़ता रहता है और लक्ष्य रेखा को एक विजयी की तरह छूता हैःः

प्रमोद कुमार सिंह